आखर हिंदी पत्रिका ; e-ISSN-2583-0597 खंड 5/अंक 2/जून 2025
Received: 27/05/2025; Accepted: 12/06/2025; Published: 28/06/2025

# फूलचंद यादव की कविताओं में निहित भाव एवं सौंदर्य

- संगीता देवी
सी-88A, द्वितीय तल,
फ्रीडम फाइटर एनक्लेव,
नेब सराई, नई दिल्ली-110068
ईमेल - sangitasr80@gmail.com

**संगीता देवी, फूलचंद यादव की कविताओं में निहित भाव एवं सौंदर्य**, आखर हिंदी पत्रिका, **खंड 5/अंक 2/जून 2025**,(66-74) https://doi.org/10.5281/zenodo.15767660

This work is licensed under CC BY-NC 4.0

## प्रस्तावना

बालक, स्वभाव से अत्यंत कोमल, सरल, जिज्ञासु, उत्साह से परिपूर्ण होते है। उनके लिए कविताएँ, कहानियाँ उनके मन तक पहुँच कर ही लिखा जा सकता है या कह सकते हैं कि एक बालमन ही बच्चों के लिए रचनाएँ कर सकता है । बाल साहित्य, सामान्य साहित्य से पूर्णतः भिन्न एक विशिष्ट विधा है। यह बच्चों के लिए रचित ऐसा साहित्य है जिसमें बाल-कथा, कविता, नाटक, एकांकी और जीवनी जैसी विविध विधाएँ सम्मिलित होती हैं। इसका सृजन करते समय साहित्यकार विशेष रूप से बाल मनोविज्ञान का ध्यान रखते हैं क्योंकि यह साहित्य विशेष रूप से बच्चों के लिए होता है। इसमें न केवल शाश्वत मूल्यों का समावेश होता है, बल्कि रोचकता और मनोरंजन भी आवश्यक तत्व होते हैं। रवीन्द्रनाथ ठाकुर का मत है कि बालकों के कोमल, सरल और निष्कलुष मन के लिए वैसा ही सहज, स्वाभाविक और संवेदनशील साहित्य होना चाहिए, जो उनकी जिज्ञासा और कल्पनाशक्ति को पोषित कर सके।

**बीज शब्द -** मनोवैज्ञानिक, संस्कार, मानवीय मूल्य, शिक्षण प्रणाली, संवेदनशील, जीवन-संघर्ष, प्रकृति, भाव, सौंदर्य, जीवन-दर्शन ।

**बाल साहित्य की परिभाषा**:

बाल साहित्य के प्रसिद्ध कवि सोहनलाल द्विवेदी ने बाल साहित्य का अर्थ स्पष्ट करते हुए कहा है, "सफल बाल साहित्य वही है जिसे बच्चे सरलता से अपना सकें और भाव ऐसे हों, जो बच्चों के मन को भाएँ। यों तो अनेक साहित्यकार बालकों के लिए लिखते रहते हैं, किन्तु सचमुच जो बालकों के मन की बात, बालकों की भाषा में लिख दें, वही सफल बाल साहित्य लेखक हैं।"[1]

डॉ. सुरेन्द्र विक्रम तथा जवाहर 'इन्दु' ने कहा है, "बाल मनोविज्ञान का अध्ययन किए बिना कोई भी रचनाकार स्वस्थ एवं सार्थक बाल साहित्य का सृजन नहीं कर सकता है। यह बिल्कुल निर्विवाद सत्य है कि बच्चों के लिए लिखना सबके वश की बात नहीं है। बच्चों का साहित्य लिखने के लिए रचनाकार को स्वयं बच्चा बन जाना पड़ता है। यह स्थिति तो बिल्कुल परकाया प्रवेश वाली है।"[2]

बाल साहित्यों में बालकों के प्रति प्रेम तो दर्शाया ही जाता है, साथ ही साथ बच्चों को भी प्रेम प्रदर्शन, आत्मीयता का भाव रखने की प्रेरणा दी जाती है। छोटे बालकों को परिवार, समाज, जीव-जंतु तथा प्रकृति से प्रेम करना बाल साहित्य ही सिखलाता है। राष्ट्र प्रेम तथा देश भक्ति का भाव भी उजागर करता है।बाल साहित्य एक सम्पूर्ण व्यक्तित्व का निर्माण करता है।

डॉ. शिरोमणि सिंह 'पथ' ने लिखा है, "बाल कविता की रचना ठीक उसी तरह होनी चाहिए जिस प्रकार माँ बच्चे का पालन पोषण करती है। उसी प्रकार बाल कविता की प्रकृति होनी चाहिए जो बाल मन में एक खिलखिलाहट और स्वतंत्र भावों का संचार करे जो न तो किन्हीं उपदेशात्मक या नैतिक बंधनों में बांधती हो, और न ही उबाऊ हो, जो बाल कविता केवल बाल मन को रिझाने और लुभाने वाली और बिना किसी बोझ वजन के होनी चाहिए।"[3]

प्लेटो के अनुसार, "बच्चों का शिक्षण बच्चों की पौराणिक, धार्मिक, नीतिकथाओं, पवित्र गाथाओं से प्रारंभ होना चाहिए। ये कहानियाँ सरल, सुबोध कविताएँ भी हो सकती हैं।"[4]

वर्तमान शिक्षण प्रणाली ने बालकों को मशीन बना दिया है, जिससे उनके सोचने और विश्लेषण करने की शक्ति दब जाती है। दूसरों से प्राप्त ज्ञान बालकों के लिए जरूरी है, किन्तु यह ज्यादा जरूरी इस ज्ञान को वह अपनी बुद्धि से परखकर अपना बनाए अन्यथा उसका बौद्धिक विकास नहीं हो पाएगा।

डॉ शकुंतला कालरा कहती हैं, "साहित्य जीवन का परिष्कार और पकड़ है इस विचार चिंतन में बच्चों के विकास में बाल साहित्य और उसे रचने वाले साहित्यकारों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है और रहेगी।"[5]

**मूल विषय : फूलचंद यादव की कविता-संग्रह 'एक थी चिड़िया' में निहित भाव एवं सौंदर्य :**

हिन्दी बाल साहित्य के स्वरूप को लेकर विभिन्न विद्वानों के विचार इस ओर संकेत करते हैं कि बाल साहित्य का उद्देश्य केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि बच्चों को उनके परिवेश और सामाजिक परिवर्तनों के प्रति सजग बनाना भी है। आज के भूमंडलीकरण के युग में, जब विज्ञान और तकनीक का विस्तार हो रहा है, बच्चों का मन भी इन परिवर्तनों से प्रभावित हो रहा है। उनके सोचने, समझने और जीवन जीने की शैली में बदलाव आया है। ऐसे में, बाल साहित्य को भी परिष्कृत, समसामयिक और आकर्षक बनाना आवश्यक है, ताकि वह बच्चों की प्रवृत्तियों, आकांक्षाओं, जिज्ञासा और कोमल भावनाओं से जुड़ सके और उनके मानसिक विकास में सहायक हो। अयोध्या सिंह उपाध्याय, माखनलाल चतुर्वेदी, हरिकृष्ण देवसरे की बाल रचनाएँ हमारी स्मृत्तियों में बसी हैं । वर्तमान समय में मधु.बी.जोशी, क्षमा शर्मा, दिविक रमेश, सुरेन्द्र विक्रम, आरती स्मित आदि की बाल रचनाएँ बच्चों में लोकप्रिय हैं । इन बाल साहित्य के रचनाकारों में फूलचंद यादव का नाम भी शामिल है, जो अपनी बाल कविता-संग्रह 'एक थी चिड़िया' के माध्यम से बच्चों में लोकप्रिय हो गए हैं ।

'एक थी चिड़िया' यह काव्य संग्रह **प्रकृति, जीवन दर्शन और लोक चेतना** से ओतप्रोत कविताओं का है, जिसमें फूलचंद यादव जी की संवेदनशीलता, दृष्टि और भाव बोध स्पष्ट रूप से झलकती हैं। बालमन की चंचलता से लेकर पर्यावरण की गहराइयों तक, हर कविता एक अलग रंग, एक अलग संदेश देती है और एक गहरे बिंब को हमारे सामने प्रस्तुत करती है।

इस काव्य-संग्रह में उन्होंने प्रकृति, जीव-जंतुओं, वृक्षों, पक्षियों और मानव जीवन के विविध पहलुओं को अत्यंत सजीव, सरल और प्रभावशाली शब्दों में उकेरा है। "एक थी चिड़िया", "बीज", "वृक्ष धरा के आभूषण", "काग", "हे विहंग !", "जागो राज दुलारे" "विश्व पर्यावरण दिवस" कविताएँ संदेशपरक, शिक्षाप्रद और संवेदनात्मक भी हैं। यह काव्य-संग्रह बालकों, युवाओं, शिक्षकों और पर्यावरण प्रेमियों सभी के लिए उपयोगी और प्रेणादायक है। इस संग्रह की प्रत्येक कविता में अलग अलग भाव एवं सौंदर्य है, जो संग्रह की विशेषता बनकर उभरती हैं –

1. **चिड़िया बालमन का प्रतीक :**

'एक थी चिड़िया' कविता चिड़िया के माध्यम से स्वतंत्रता, चंचलता और जीवन की सहजता को दर्शाती है। चिड़िया का व्यवहार इस बात का प्रतीक हैं कि जीवन को उल्लास, स्वतंत्रता और मस्ती से जीना चाहिए। यह कविता बच्चों को प्रकृति और जीवन के कल्पनाशक्ति को उड़ान देती है । यह सरल और भावनात्मक शैली में लिखी गयी है, जिसमें एक चिड़िया के माध्यम से स्वतंत्रता, चंचलता, जीवन की गति और सौंदर्य का चित्रण किया गया है ।

विषयवस्तु की बात करे तो, चिड़िया केवल एक पक्षी नहीं बल्कि जीवन की गति, मुक्तता और आत्मनिर्भरता का प्रतीक बनकर उभरती है। उसकी जो गतिविधियाँ है चहकना, फुदकना, उड़ना, बैठना, हँसना, बिदकना सभी कुछ स्वतंत्रता और बालमन की चंचलता की झलक देती हैं। जैसे –"एक थी चिड़िया, बड़ी ही चंचल" कभी किलकती कभी थी हँसती,"।[6]

चिड़िया यहाँ केवल एक पक्षी नहीं बल्कि जीवन, स्त्री, स्वतंत्र आत्मा या बाल-मन का प्रतीक है। यह कविता हमें यह भी सिखाती है कि जीवन में हर पल को उत्साहपूर्वक, चंचलता के साथ, ठहराव के बिना जीना चाहिए।

इस कविता की भाषा सरल, प्रवाहमयी और चित्रात्मक है, जो बाल साहित्य के लिए उपयुक्त है लेकिन वयस्क पाठकों के लिए भी आकर्षक का केन्द्र है । 'चकर बकर', 'चह चह', 'फुदकती', 'बिदकती', 'थिरकती' आदि शब्दों में लयात्मकता और ध्वनि-सौंदर्य है जो कविता को संगीतात्मक बनाती है।

कविता में अनुप्रास अलंकार, जैसे "कभी चहकती, कभी फुदकती" का सुंदर प्रयोग हुआ है। यह पद्य मुक्त छंद में है, जिसमें काव्य-छंदों की नियमितता नहीं, लेकिन फिर भी इसमें एक आंतरिक लय और ताल है जो पाठक को बाँधे रखती है।

### 2. करुणा, सम्मान और स्वतंत्र विचार :

**"हे विहंग!"** कविता में एक बच्चा एक पक्षी से स्नेहपूर्वक बात करता है। वह चिड़िया से पूछता है कि वह कहाँ से आई है और उसका घर कहाँ है। वह आग्रह करता है कि वह उसके घर की छत की दीवार पर आकर बसे, वहाँ रहे। यह आमंत्रण प्रेम, अपनेपन और प्रकृति से जुड़ाव को दर्शाता है। चिड़िया आकाश में उड़ती है और मुक्त रूप से विचरण करती है। पक्षी को अपने आँगन में बुलाना बच्चों की सहज, जिज्ञासा और स्नेहभाव को दर्शाती है। यह भाव बच्चों में प्रकृति के प्रति प्रेम, अपनापन और संवाद की भावना उत्पन्न करती है। जैसे -"आई हूँ मैं बड़ी दूर

से, पर्वत पेड़ है डेरा मैं विहंग अम्बर में बिहरूँ, क्यूँ किसी के घर हो डेरा."[7] इस पंक्ति में देखा जा सकता है। यह स्वतंत्रता, प्राकृतिक जीवन और न बंधने की चेतना को दर्शाता है।बच्चों के लिए यह संदेश महत्त्वपूर्ण है कि हर जीव की अपनी स्वतंत्रता होती है और हमें उसकी इच्छाओं का सम्मान करना चाहिए।

**"हे विहंग!"** कविता की भाषा सरल, सहज और भावप्रवण है, जो बच्चों की समझ के अनुकूल है। "मुंडेर", "आँगन", "डेरा" जैसे शब्द बच्चों के दैनिक जीवन और ग्रामीण-संस्कृति से जुड़े हैं, जो सांस्कृतिक आत्मीयता को प्रकट करते हैं। इस कविता में लयात्मकता है, यह संवादात्मक शैली में लिखी गई कविता है, जो बच्चों को कविता से जोड़ती है और उन्हें सृजनात्मक तरिके से सोचने के लिए प्रेरित करती है।

### 3. जीवन-संघर्ष से जीवन-दर्शन की यात्रा :

'बीज' कविता एक प्रेरणादायक, गहन तथा समाजोपयोगी संदेश से परिपूर्ण कविता है। यह एक बीज के जीवन यात्रा के माध्यम से न केवल वृक्ष के महत्व को उजागर करती है, बल्कि उससे जुड़े आर्थिक, सामाजिक, पर्यावरणीय और नैतिक पहलुओं पर भी प्रकाश डालती है । यह पद्य एक बीज की मिट्टी में विलीन होने से लेकर विशाल वृक्ष बनने की विकास-यात्रा को दिखाती है। लेकिन यह केवल एक पौधे की जैविक वृद्धि की बात नहीं करती, बल्कि यह वृक्षों के महत्व, उनके सामाजिक योगदान, मानव जीवन में उनकी भूमिका और पर्यावरणीय संतुलन का गहरा संदेश देती है।

बीज मिट्टी में दबकर भी हार नहीं मानता, बल्कि भीतर से मेहनत करता है, और अंत में पौधा बनकर प्रकट होता है। यह जीवन में धैर्य, आशा और निरंतर प्रयास करने की सीख देता है। जैसे -"एक छोटा सा बीज, मिटा अपनी हस्ती को धारण किया आकार बड़ा, समस्त जीव, राही को आराम दिया''[8] इस कविता में बीज को व्यक्ति के जीवन, त्याग और राष्ट्र-निर्माण से जोड़ा गया है ।

इस कविता की भाषा सरल, बोधगम्य और प्रवाहमयी है, जिससे यह कविता बच्चों, युवाओं और आम जनता सभी के लिए सुलभ बनती है। पद्य का विस्तार बहुत व्यापक है, लेकिन उसका प्रवाह संतुलित बना रहता है, जिससे पाठक अंत तक जुड़ा रहता है। बच्चों का वृक्ष के पास आना, उसकी टहनियाँ फैलना, शाखाओं की गिनती न हो पाना यह सब दृश्यात्मक चित्रों की तरह सामने आता है ।

### 4. यथार्थ, प्रकृति और उपयोगिता :

'काग' कविता में में कवि ने कौआ के माध्यम से उसके रूप, स्वभाव, व्यवहार और सामाजिक दृष्टिकोण का वर्णन किया गया है, जो मानवीय प्रवृत्तियों को भी दर्शाता है। कौआ एक ऐसा पक्षी है जो कभी अपना रंग नहीं बदलता, उसका स्वभाव और रूप हर मौसम में एक जैसा ही रहता है। यह कविता कौए की स्थिरता और सच्चाई को दर्शाता है। यद्यपि उसकी छवि नकारात्मक मानी जाती है, फिर भी वह सही समय पर विवेकपूर्ण और सजग कार्य करता है, यानी आवश्यकता पड़ने पर वह चतुराई से सही निर्णय लेता है। कभी-कभी कौआ संदेशवाहक या सगुन (शुभ संकेत) के रूप में भी आता है।

यह कविता कौए की बनावट, का वर्णन करते हुए यह प्रश्न उठाती है कि जो प्राणी दिखने में "काला", कठोर और कर्कश है, वह वास्तव में कितना उपयोगी, संवेदनशील और विवेकी भी हो सकता है। यह काव्य रूप और गुण, धारणाओं और यथार्थ, प्रकृति और उपयोगिता के द्वंद्वात्मक संबंधों पर आधारित है।

इसकी भाषा सहज, स्पष्ट और प्रभावी है। छंदबद्ध शैली में लिखी कविता में लय टूटने नहीं पाता है। तुकबंदी सजीव और प्राकृतिक है, जैसे – "काला – पाला", "बोलत – बतलाता" इत्यादि। इस कविता में कवि कौए का व्यावहारिक विरोधाभास को दर्शाते हैं, जैसे "कटु कर्कश स्वर नहीं सुहाला" लेकिन "विवेक का सहज सजग उपयोग करता" आदि कौए के भीतर के द्वैत को दर्शाता है।

**5. आध्यात्मिक दृष्टिकोण :**

संत शिरोमणि तुलसीदास ने भगवान राम की महिमा का सुंदर वर्णन करते हुए बताया है कि कागभुशुण्डि रामकथा का अद्भुत वक्ता है। जब कोई व्यक्ति नागपाश (बंधन, अज्ञान या भ्रम) में फँसा होता है, तब यही पक्षी ज्ञान के पंखों से उसे छुड़ाता है। यह कौआ अनन्य भक्ति और समर्पण का जो प्रतीक है, राम कथा का प्रचारक भी बन जाता है। जैसे-जैसे मनुष्य राम के प्रति तन, मन और बुद्धि से समर्पित हो जाता है, वैसे-वैसे उसके सभी संशय उड़ जाते हैं, और वह भी कागभुशुण्डि के समान मुक्त और ज्ञानी बन जाता है। कागभुशुण्डि एक प्रतीक हैं उस आत्मा का, जिसने राम में अपने अस्तित्व को समर्पित कर दिया और अब केवल राम कथा का रसपान और प्रसार करता है। हमारे भारतीय परंपरा में कौए को संदेशवाहक, सगुन, और पूर्वजों का प्रतीक मानकर सम्मान दिया गया है।

"काग" (कौआ) यहाँ केवल पक्षी नहीं, अपितु *ज्ञानी, विवेकी, संशयरहित भक्ति मार्गी जीव* का प्रतीक है। "भेद बुद्धि जब मिट जाती है, सबहिं हितकर हो जाते हैं"[9] - यह पंक्ति **अद्वैत वेदांत एवं तुलसी के समत्व दर्शन** की ओर संकेत करती है। "विष भी औषधि हो जाती है"[10] — यह प्रसिद्ध भारतीय सांस्कृतिक कथन को *राम*

*भक्ति की शक्ति* से जोड़ता है। **बालक राम संग कागभुशुण्डि की क्रीड़ा**, एक **भावनात्मक पुल** है जो भक्ति को बाल-सुलभ, सहज और आत्मीय बनाता है।विषय अत्यंत **मौलिक और गूढ़** है। कवि ने कौए जैसे प्राणी को लेकर आध्यात्मिक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है ।

इस कविता की **भाषा** सहज, सरस एवं लोकबोध से युक्त है, जो तुलसीदास की परंपरा का अनुगमन करती है। *तुकबंदी सजीव* है – जैसे "क्रीड़ा – हर्षाते", "खेलत – भागत", "बचपन – तत्क्षण" आदि। पद्य में **भक्ति-रस** प्रमुख है, लेकिन दर्शन और काव्यबोध भी स्पष्ट रूप से संलग्न हैं।

**6. श्रद्धा और वात्सल्य भाव** :

**"जागो राज दुलारे" प्रभात वंदना यानी कि** सुबह की आराधना या जगाने का गीत है, जिसमें प्रकृति, पशु-पक्षी और समस्त सृष्टि के जागरण का चित्रण करते हुए *बालरूप* को जगाने का विनम्र और कोमल निवेदन किया गया है। यह भक्ति, सौंदर्य और प्रकृति के साथ आध्यात्मिक अनुराग का उत्कृष्ट समन्वय है।

यह रचना **संवेदनशील, श्रद्धा और कोमल भक्तिभाव** से ओतप्रोत है, जहाँ संपूर्ण प्रकृति जैसे ईश्वर की सेवा में स्वयं उपस्थित होती प्रतीत होती है। भाषा सरल, सरस और *ब्रज एवं अवधी मिश्रित खड़ी बोली* में है। शैली **गीतात्मक** है, जो **लोरी** या **प्रभाती** जैसी लगती है। "जागो राज दुलारे" की आवृत्ति **मंत्रोच्चार के समान प्रभाव** डालती है।

"भोर भये सब जागे", "नभमण्डल में नहीं तारे", "चन्द्र छटा क्षीण ह्वै चलै", "सरसिज प्रस्फुटित"[11]. ये सभी पंक्तियाँ **प्रभात के सौंदर्य** को जीवंत रूप में प्रस्तुत करती हैं। "पक्षी जागे", "भ्रमर करे गुजारे" आदि प्रकृति को मानवीय अनुभूति से जोड़ा गया है। यह रचना **सघन श्रद्धा और वात्सल्य भाव** से भरी हुई है।

**7. पर्यावरण संरक्षण की चिंता :**

*'विश्व पर्यावरण दिवस' कविता* पर्यावरण के प्रति जागरूकता और जिम्मेदारी का संदेश देता है। यह *विश्व पर्यावरण दिवस* को समर्पित एक प्रेरणात्मक कविता है, जिसमें पर्यावरण संरक्षण का महत्व, उसकी वर्तमान स्थिति, और मानव जाति की ज़िम्मेदारी को उजागर किया गया है। कवि का संदेश है कि हमें अधिक से अधिक वृक्ष और वनस्पतियाँ लगाकर धरती को हरियाली से भर देना चाहिए, ताकि यह सुंदर, शीतल और जीवनदायिनी बनी रहे।

कविता की मूल भावना पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता को उजागर करना है। कवि मानव जाति को संबोधित करते हुए उसे चेतावनी देता है कि अब समय आ गया है जब उसे पर्यावरण के प्रति अपने कर्तव्यों को निभाना होगा। यह संदेश अत्यंत सामयिक और प्रासंगिक है।

काव्य सौंदर्यात्मक भाषा, तुकांत और लयबद्धता कविता को विशेष बनाती है। इससे पाठक को कविता रुचिकर लगती है और संदेश प्रभावी रूप से संप्रेषित होता है। यह कविता हर आयु वर्ग के लिए बोधगम्य है।

**8. प्रकृति-प्रेम और भारतीय संस्कृति :**

**'वृक्ष धरा के आभूषण'** कविता वृक्षों के महत्व को अत्यंत भावनात्मक और दार्शनिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत करती है। इसमें वृक्षों को *"धरा के आभूषण"* और *"वसुधा का श्रृंगार"* कहकर उनके सौंदर्यात्मक, पर्यावरणीय और जीवनदायिनी गुणों को दर्शाया गया है। कविता का मुख्य विषय वृक्षों का पर्यावरण और मानव जीवन में महत्व है। कवि ने यह स्पष्ट संदेश दिया है कि वृक्ष केवल जीवित प्राणी ही नहीं, अपितु मानव सभ्यता के लिए आवश्यक तत्व हैं। वृक्ष पृथ्वी का श्रृंगार हैं।ये अन्न, जल, वायु, औषधि और छाया प्रदान करते हैं। वृक्ष का योगदान जन्म से मृत्यु तक बना रहता है। एक वृक्ष दस पुत्रों के समान मूल्यवान है — यह जनश्रुति को उद्धृत करता है।

इस कविता की भाषा सरल, सरस एवं भावनात्मक है। अलंकारों का सहज प्रयोग किया गया है, जैसे कि ***"वृक्ष धरा के आभूषण हैं"*** – रूपक अलंकार है। – तुलना और लोकविश्वास का प्रस्तुतीकरण है। छंदबद्धता कुछ स्थलों पर स्पष्ट है, किंतु कुछ पंक्तियों में लय थोड़ी टूटती है। फिर भी, भावनात्मक प्रवाह बना रहता है।

## निष्कर्ष:

इन कविताओं में प्रकृति, जीवन, और मानवीय मूल्यों का सुंदर समन्वय दृष्टिगोचर होता है। ये रचनाएँ जीवन के विविध पहलुओं को सरल, सरस और भावनात्मक रूप में प्रस्तुत करती हैं। **"एक थी चिड़िया"** और **"हे विहंग!"** जैसी कविताएँ स्वतंत्रता, चंचलता, और आत्मनिर्भरता का प्रतीक हैं, वहीं **"एक था बीज"** से लेकर विशाल वृक्ष बनने तक की कथा परिश्रम, धैर्य और सामाजिक उपयोगिता का पाठ पढ़ाती है। कौए पर आधारित कविताओं में सामान्यतः उपेक्षित पक्षी को भी उपयोगी, बुद्धिमान और संदेशवाहक के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जिससे यह संदेश मिलता है कि **हर जीव में कुछ न कुछ मूल्य अवश्य होता है**। **"तुलसी"** और **"जागो राज दुलारे"** में भक्ति, भारतीय सांस्कृतिक विरासत और आध्यात्मिकता की गहराई को अनुभव किया जा सकता है।

**"विश्व पर्यावरण", "वृक्ष धरा के आभूषण"** जैसी रचनाएँ पर्यावरण संरक्षण, वृक्षारोपण और जैविक संतुलन की आवश्यकता को रेखांकित करती हैं। **अंततः,** इन रचनाओं में कवि ने गहन अनुभूतियों, प्राकृतिक सौंदर्य, जीवन के रहस्यों और सामाजिक जागरूकता को सरल, मधुर और प्रभावी भाषा में पिरोया है, जो न केवल बाल पाठकों बल्कि समस्त मानव समुदाय के लिए अमूल्य निधि है।

## संदर्भ सूची:


1. हरिकृष्ण देवसरे, हिन्दी बाल साहित्य एक अध्ययन, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली, सन् 1969, पृष्ठ सं.-07
2. संपादक राष्ट्र बंधु, बाल साहित्य समीक्षा, मई 1988, बाल कल्याण संस्थान, कानपुर, पृष्ठ सं. -06
3. शिरोमणि सिंह ,बाल कविता में सामाजिक सांस्कृतिक चेतना , आशा प्रकाशन, कानपुर, 2013, पृ. सं.- 62
4. प्रेम भार्गव, कैसे बने बालक संस्कारी और स्वस्थ-राधाकृष्ण पेपरबैक्स, नई दिल्ली. 2015 पृ. सं.-129
5. शकुंतला कालरा , हिन्दी बाल साहित्य विचार और चिंतन-नमन प्रकाश, नई दिल्ली, 2014, पृ. सं.-09
6. फूलचंद यादव, एक थी चिड़िया, सर्व भाषा ट्रस्ट, प्रकाश नई दिल्ली, सं. 2024, पृ. सं.-09
7. वही, पृ. सं.-11
8. वही, पृ. सं.-13
9. वही, पृ. सं.-18
10. वही पृ. सं.-18
11. वही, पृ. सं.- 19


**********